NEEV

2027

काव्य खंड

राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद

Class -9th | HINDI

By- अदिति मैम

Lecture - 03

पाठ सूची

1. राम-परशुराम-लक्ष्मण संवाद (Part - 02)
2. काव्यांश
3. लघु उत्तरीय प्रश्न

रामचरितमानस

'बालकाण्ड'

Sapne
bade rakho
janaab,
kyunki jeet bhi
badi hi achi
lagti hai.

Aditi Ma'am
JOIN MY OFFICIAL TELEGRAM CHANNEL
@PWADITIPUROHITMAAM
Physics Walla

HELLO
CUTIES..!

काव्यांश 2

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे।।
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।।
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।

काव्यांश 2

अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।

सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।।

मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी।।

भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता।।

राम – रघुवंशी

कृष्ण – यदुवंशी

परशुराम – भृगुकुल

काव्यांश 2

"सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।।

हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।"

शब्दार्थ

- **महीप** - राजा,
- **चापखंड** - धनुष के टुकड़े,
- **रिस** - क्रोध,
- **कठोरा** - कठोर,
- **जड़** - मूर्ख,
- **बेगि** - शीघ्र,
- **मूढ़** - मूर्ख,
- **उलटउँ** - उलट दूँगा / नष्ट कर दूँगा,
- **नृपु** - राजा,
- **कुटिल** - चालाक / दुष्ट,
- **हरषे** - प्रसन्न हुए,
- **सुर** - देवता,
- **मुनि** - ऋषि,
- **नाग** - सर्प / नागलोक के निवासी,
- **सोचहिं** - चिंता करते हैं,
- **त्रास** - भय,

शब्दार्थ

- **महतारी -** माता,
- **बिधि -** विधाता (भाग्य),
- **सँवरी -** बनी हुई,
- **भृगुपति -** परशुराम,
- **सुभाउ -** स्वभाव,
- **अरध निमेष -** आधा पल,
- **कलप -** बहुत लंबा समय,
- **हरषु -** प्रसन्नता,
- **बिषादु -** दुख / चिंता,
- **कछु -** कुछ,
- **श्रीरघुबीरू -** भगवान राम

व्याख्या

कवि कहते हैं कि राजा जनक ने परशुराम जी को सारी घटना बताई कि किस कारण से सभी राजा यहाँ एकत्र हुए थे। यह सुनकर परशुराम जी ने इधर-उधर देखा और धनुष के टूटे हुए टुकड़ों को भूमि पर पड़ा पाया। यह देखकर वे अत्यंत क्रोधित हो उठे और कठोर वचनों में बोले कि हे मूर्ख जनक! बताओ इस धनुष को किसने तोड़ा है। वे आगे क्रोध में कहते हैं कि उसे तुरंत मेरे सामने प्रस्तुत करो, नहीं तो मैं तुम्हारे राज्य सहित पूरी पृथ्वी को उलट-

व्याख्या

पुलट दूँगा। उनके इस भयानक क्रोध को देखकर राजा जनक अत्यंत भयभीत हो गए और कोई उत्तर नहीं दे पाए, जबकि कुछ कुटिल राजा मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। देवता, ऋषि, नाग, नगर के स्त्री-पुरुष सभी अत्यधिक चिंता और भय से भर गए। सीता जी की माता भी मन ही मन पछता रही थीं कि विधाता ने बनी हुई बात को बिगाड़ दिया। परशुराम जी के स्वभाव को सुनकर सीता जी इतनी व्याकुल हो गईं कि उनके लिए आधा क्षण भी

व्याख्या

कल्प (बहुत लंबा समय) के समान लगने लगा। इस प्रकार पूरे वातावरण में भय, चिंता और तनाव व्याप्त हो गया।

कवि कहते हैं कि भगवान राम ने देखा कि सभा में उपस्थित सभी लोग भयभीत होकर इधर-उधर देख रहे हैं और जानकी जी (सीता) भी अत्यंत डरी हुई हैं। यह देखकर भी उनके मन में न तो कोई अत्यधिक प्रसन्नता उत्पन्न हुई और न ही किसी प्रकार का

व्याख्या

दुख या चिंता हुई। वे पूर्ण रूप से शांत, संयमित और स्थिर बने रहे। ऐसी स्थिति में भी उन्होंने बिना किसी घबराहट या उत्तेजना के अत्यंत धैर्यपूर्वक और संतुलित वचन बोले। इससे यह स्पष्ट होता है कि भगवान राम का स्वभाव अत्यंत गंभीर, धैर्यवान और संतुलित है, वे हर परिस्थिति में अपने मन को स्थिर रखते हैं।

विशेष

- इस पद में परशुराम जी के तीव्र क्रोध और उग्र स्वभाव का चित्रण हुआ है।
- भाषा अवधी है, जो सरल और प्रभावशाली है।
- इसमें दृश्यात्मकता है, जिससे सभा का वातावरण जीवंत हो उठता है।
- "अरध निमेष कलप सम" में अतिशयोक्ति अलंकार का सुंदर प्रयोग है।
- इसमें रौद्र रस और भय का वातावरण स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ है।

काव्यांश 3

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

काव्यांश 3

सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।
बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।

काव्यांश 3

“रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।“

शब्दार्थ

- **नाथ –** प्रभु / स्वामी,
- **संभुधनु –** भगवान शिव का धनुष,
- **भंजनिहारा –** तोड़ने वाला,
- **दास –** सेवक,
- **आयसु –** आज्ञा,
- **रिसाइ –** क्रोधित होकर,
- **मुनि कोही –** क्रोधी मुनि (परशुराम),
- **सेवकाई –** सेवा,
- **अरि –** शत्रु,
- **करनी –** कार्य,
- **सहसबाहु –** एक बलवान राजा (परशुराम का शत्रु),
- **रिपु –** शत्रु,
- **बिलगाउ –** अलग करो,

शब्दार्थ

- **समाजा** – सभा,
- **परसुधर** – फरसा धारण करने वाला (परशुराम),
- **अपमाने** – अपमानित होकर,
- **लरिकाई** – बचपन में,
- **गोसाईं** – स्वामी,
- **ममता** – मोह / लगाव,
- **भृगुकुलकेतू** – भृगु वंश के ध्वज (परशुराम)।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि परशुराम जी क्रोध में कहते हैं कि हे प्रभु! जिसने भगवान शिव के धनुष को तोड़ा है, वह तुम्हारा कोई सेवक ही होगा, उसे तुरंत मेरे सामने प्रस्तुत करो। वे पूछते हैं कि मुझे क्यों नहीं बताया जा रहा है और यह सुनकर क्रोध में भरकर कठोर वचन बोलते हैं। वे कहते हैं कि सच्चा सेवक वही होता है जो सेवा करता है, और जो शत्रु का कार्य करता है, उससे युद्ध किया जाना चाहिए। वे राम से कहते हैं कि जिसने शिव धनुष को तोड़ा है, वह मेरे

व्याख्या

लिए सहस्रबाहु के समान शत्रु है। इसलिए उसे इस सभा से अलग कर दो, नहीं तो मैं सभी राजाओं का वध कर दूँगा। यह सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुरा उठते हैं और परशुराम जी के क्रोधपूर्ण वचनों को अपमान समझकर उत्तर देते हैं। वे कहते हैं कि हमने बचपन में ही बहुत से धनुष तोड़े हैं, परंतु कभी आपने इस प्रकार क्रोध नहीं किया। वे आगे कहते हैं कि इस धनुष के प्रति आपको इतना मोह क्यों है। लक्ष्मण जी के इस उत्तर को सुनकर भृगुवंश के

व्याख्या

परशुराम जी और भी अधिक क्रोधित हो उठते हैं। इस प्रकार इस प्रसंग में परशुराम जी के क्रोध और लक्ष्मण जी के साहसपूर्ण तथा व्यंग्यपूर्ण उत्तर का चित्रण किया गया है।

कवि कहते हैं कि परशुराम जी क्रोध में लक्ष्मण को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे राजकुमार! तुम समय के वश में होकर ऐसी बातें कर रहे हो और तुम्हें अपने वचनों पर कोई नियंत्रण नहीं है। वे उन्हें

व्याख्या

चेतावनी देते हैं कि इस प्रकार के अनुचित वचन बोलना उनके लिए हानिकारक हो सकता है। आगे वे कहते हैं कि यह साधारण धनुष नहीं है, बल्कि यह भगवान शिव का धनुष है, जिसकी महिमा पूरे संसार में प्रसिद्ध है। इसलिए इस धनुष के विषय में इस प्रकार के हल्के और अपमानजनक शब्द बोलना उचित नहीं है। इस प्रकार परशुराम जी अपने क्रोध और गर्व को प्रकट करते हुए लक्ष्मण को समझाने का प्रयास करते हैं।

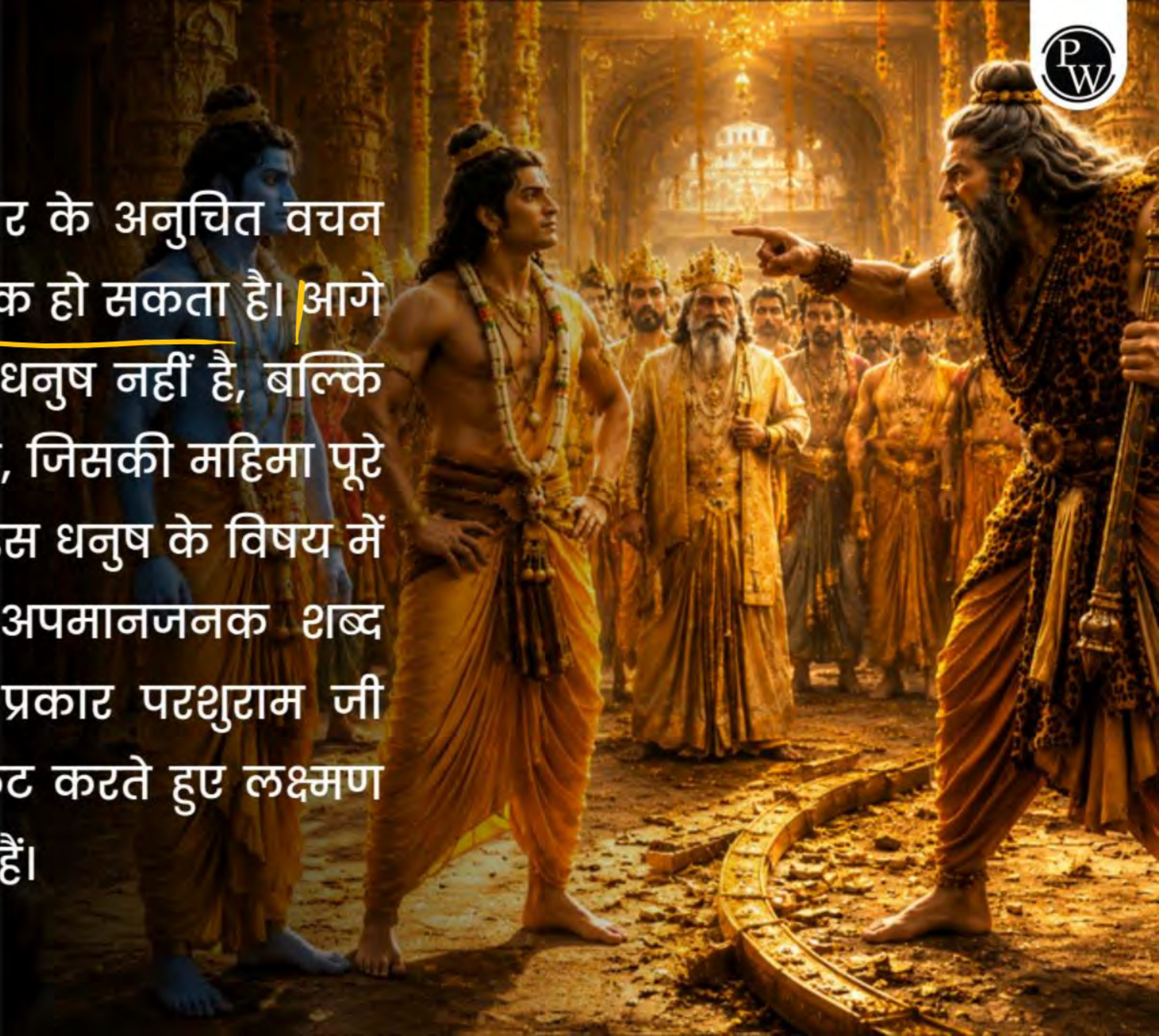

विशेष

- इस पद में परशुराम जी के उग्र क्रोध और लक्ष्मण जी के साहस का वर्णन है।
- भाषा अवधी है, जो सरल और प्रभावशाली है।
- इसमें संवाद शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।
- लक्ष्मण जी के वचनों में व्यंग्य भाव दिखाई देता है।
- इसमें वीर रस और रौद्र रस का सुंदर समन्वय है।

प्रश्न

"पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा ।।" यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगोंकी किस मनःस्थिति को दिखाती है?

1. आदर और सम्मान
2. भक्ति और श्रद्धा
3. भय और शिष्टाचार
4. प्रेम और सहिष्णुता

प्रश्न

"जनक बहोरि आइ सिरु नावा | सीय बोलाइ प्रनामु करावा" पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है?

1. संवेदनशीलता
2. शिष्टता
3. सहनशीलता
4. उदासीनता

प्रश्न

"अति रिस बोले बचन कठोरा।" जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था-

1. उचित आदर सत्कार न मिलना
2. जनक द्वारा समाचार छिपाना
3. शिव-धनुष का खंडित होना
4. अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति

प्रश्न

राम का कथन "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

1. कूटनीति और चतुराई
2. विनम्रता और मर्यादा
3. त्याग और समर्पण
4. दृढ़ता और आत्मविश्वास

प्रश्न

"सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने ।।" लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था?

1. वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे।
2. उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।
3. वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे।
4. वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

प्रश्न

"अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?

इस पंक्ति का भाव है कि आधा क्षण भी बहुत लंबे समय (कल्प) के समान लग रहा था। यह पंक्ति सीता जी के संदर्भ में कही गई है। जब उन्होंने परशुराम जी के क्रोधपूर्ण स्वभाव के बारे में सुना, तो वे अत्यंत चिंतित और भयभीत हो गईं। उनके मन में राम के प्रति चिंता थी, इसलिए समय बहुत धीमा और लंबा लगने लगा। इससे सीता जी की व्याकुलता और प्रेमपूर्ण चिंता का भाव प्रकट होता है।

प्रश्न

"सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।" पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

इस चेतावनी का सभा में उपस्थित सभी राजाओं और लोगों पर गहरा भय और आतंक का प्रभाव पड़ा होगा। परशुराम जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि धनुष तोड़ने वाले को अलग नहीं किया गया, तो वे सभी राजाओं का वध कर देंगे। उनके इस कठोर और क्रोधपूर्ण कथन से सभी लोग डर गए होंगे और किसी को कुछ बोलने का साहस नहीं हुआ होगा। इससे सभा में तनाव, चिंता और असुरक्षा का वातावरण बन गया होगा।

प्रश्न

तुलसीदास ने राम और लक्ष्मण के माध्यम से एक ही परिस्थिति के प्रति दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के 'तर्क' का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।

मेरी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग अधिक उचित है। क्रोध की स्थिति में यदि सामने वाला व्यक्ति भी कठोर या तर्कपूर्ण उत्तर दे, तो विवाद और बढ़ सकता है। जबकि विनम्रता, धैर्य और शांत व्यवहार से क्रोधित व्यक्ति का मन धीरे-धीरे शांत हो जाता है। राम जी ने इसी मार्ग को अपनाया और अंत में परशुराम का क्रोध शांत हो गया। इसलिए कठिन परिस्थितियों में विनम्रता और संयम सबसे प्रभावी उपाय होते हैं।

प्रश्न

'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।' श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

यह पंक्ति श्री राम के धैर्य, संयम और भावनात्मक संतुलन को दर्शाती है। वे न तो अत्यधिक प्रसन्न होते हैं और न ही दुख या चिंता में घबराते हैं, बल्कि हर परिस्थिति में शांत और स्थिर रहते हैं। उनका यह गुण उन्हें अन्य पात्रों से अलग बनाता है, क्योंकि जहाँ परशुराम क्रोध में हैं और लक्ष्मण व्यंग्यपूर्ण प्रतिक्रिया देते हैं, वहीं राम संतुलित और गंभीर बने रहते हैं। उनका यह व्यवहार आदर्श व्यक्तित्व का परिचय देता है और यह सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी हमें धैर्य और संयम बनाए रखना चाहिए।

संवादों की विशेषता

1. राम की विनम्रता 2. परशुराम का रौद्र रूप 3. लक्ष्मण का प्रत्युत्तर 4. पौराणिक संदर्भ नाटकीयता 5. नाटकीयता

संवादों की विशेषता	उदाहरण (पंक्तियाँ)
राम की विनम्रता	"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥ "
परशुराम का रौद्र रूप	"अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष के तोरा ।।"
लक्ष्मण का प्रत्युत्तर	"बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई ।।"
पौराणिक संदर्भ	"धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।"
नाटकीयता	"सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने ।।"

गुहकार्य

अर्थ लिखकर आयेंगे।

Thank you Cuties